

# विपत्तियों से रक्षा कर

## लघु उत्तरीय प्रश्न

### Solution 1:

कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। सुख के दिनों में उनमें कभी घमंड न आए। दुखों में भी ईश्वर को न भूले, उसका विश्वास अटल रहे। कवि दुखों में सांत्वना नहीं पाना चाहता क्योंकि उनके अनुसार सुख और दुख जीवन के अनिवार्य अंग हैं।

### Solution 2:

‘विपत्तियों से रक्षा कर’ कविता में कवि ‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर’ ने ईश्वर से प्रार्थना रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। उनके अनुसार सुख और दुख जीवन के अनिवार्य अंग हैं।  
दुखों का सामना करने से मनुष्य को आत्मबल मिलता है तथा वह जीवन में नई चुनौतियों का सामना बड़ी आसानी से कर सकता है। उसे लोगों की तथा अपनों-परायों की पहचान होती है।

### Solution 3:

‘विपत्तियों से रक्षा कर’ कविता में कवि ‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर’ ने ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके।  
त्राण शब्द का प्रयोग इस कविता के संदर्भ में बचाव, आश्रय और भय निवारण के अर्थ में किया जा सकता है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मैं यह नहीं चाहता के दुखों में आप मेरी रक्षा करें बल्कि मिले हुए दुखों को सहने, उसे झेलने की शक्ति के लिए प्रार्थना करता है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसका बल पौरुष न हिले, वह सदा बना रहे। कवि के अनुसार संघर्षों से लड़कर ही सच्चे सुख की प्राप्ति होती है।

### Solution 4:

‘विपत्तियों से रक्षा कर’ कविता में कवि ‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर’ ने ईश्वर से प्रार्थना रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके।  
कवि अनुनय करता है कि चाहे सब लोग उसे धोखा दे, सब दुख उसे घेर ले पर ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कम न हो, उसका विश्वास बना रहे। उसका ईश्वर के प्रति विश्वास कभी न डगमगाए।

### Solution 5:

‘विपत्तियों से रक्षा कर’ कविता में कवि ‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर’ ने ईश्वर से प्रार्थना रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके।

इस कविता में कष्टों से छुटकारा नहीं कष्टों को सहने की शक्ति के लिए प्रार्थना की गई है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसका बल पौरुष न हिले, वह सदा बना रहे और कोई भी कष्ट वह धैर्य से सह ले। यहाँ ईश्वर में आस्था बनी रहे, कर्मशील बने रहने की प्रार्थना की गई है।

### हेतुलक्ष्यी प्रश्न

#### Solution 1:

1. अपने दुख से व्यथित चित्त को सांत्वना देने की भिक्षा।
2. संसार से हानि ही मिले केवल वंचना ही पाऊँ।
3. मेरा भार हल्का करके, मुझे सांत्वना न दे।
4. मैं तेरा मुख पहचान पाऊँ।

#### Solution 2:

1. कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मन संसार से मिली हानि या वंचना को क्षति नहीं मानता।
2. कवि ईश्वर से विपत्तियों से भयभीत न होने का वरदान चाहता है।
3. सुखभरे क्षण में भी कवि नतमस्तक रहना चाहता है, ताकि उनके मन में कभी घमंड उत्पन्न न हो।
4. कवि दुखभरी रातों में ईश्वर के सामर्थ्य पर शंका नहीं करना चाहता है।